MODEL QUESTION PAPER SET- 1 : 2021 - 22

STD 10TH – HINDI-ENTIRE- (THEORY)

MM : 80 **SOLUTION** **Time : 3 Hrs**

ENTIRE SYLLABUS:

विभाग १ – गद्य **[२० अंक]**

प्र.१. (अ) निम्नलिखित पठित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[८]**

१) आकलन कृति ।

i) आकृति पूर्ण कीजिए। ०२

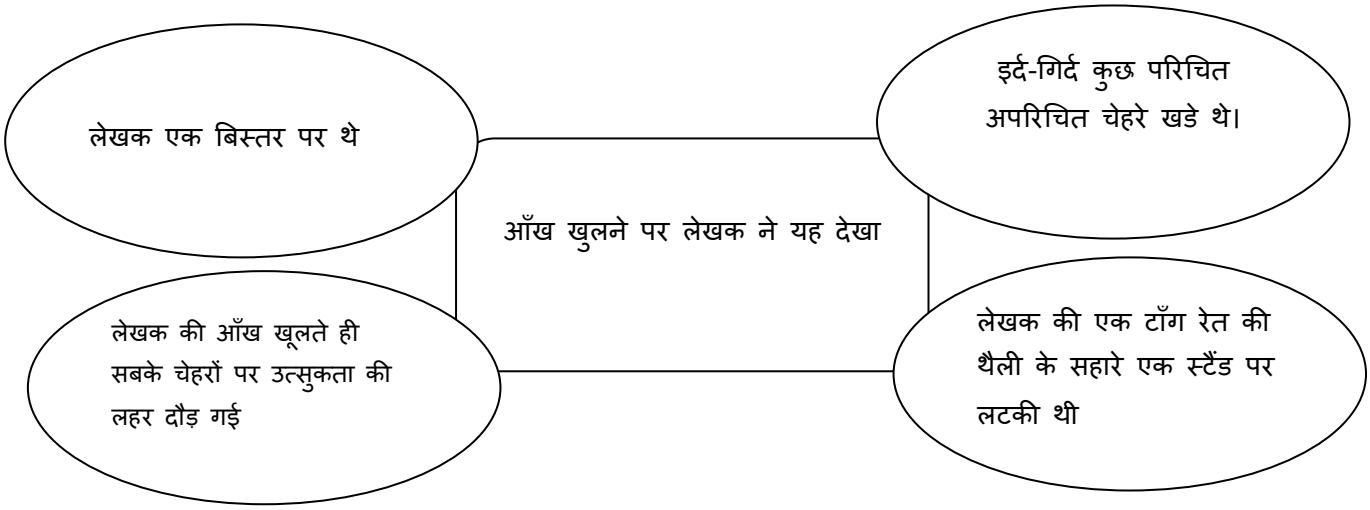

ii) अंतर स्पष्ट कीजिए: **०२**

१)	प्राइवेट अस्पताल:	सार्वजनिक अस्पताल :
→	प्राइवेट अस्पताल में अच्छी सुविधाएँ होती	सार्वजनिक अस्पताल में कई बार सुविधाओं का अभाव होता है।
२)	प्राइवेट वॉर्ड :	जनरल वार्ड :
→	मिलने का कोई निश्चित समय नहीं	मिलने का निश्चत समय होता है।

iii) शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए। ०२

१) वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी रखे जाते है **:-** चिड़ियाघर

२) जहाँ मुफ्त में भोजन मिलता है **:-** लंगर **(**भंडारा**)**

iv) सार्वजनिक अस्पतालों में मरीजो को होने वाली पेरशानियों के विषय में अपने विचार लिखिए। ०२

→ देश में अनगिनत निजी अस्पताल हैं, परंतु देश की आधी से अधिक गरीब जनता सार्वजनिक अस्पतालों पर ही निर्भर है। इन अस्पतालों के हालात बहुत दयनीय है। इन अस्पतालों की एक्स-रे आदि मशीनों का कोई ठिकाना नहीं होता। गरीबों को वहाँ इलाज के स्थान पर तकलीफ ही मिलती है। सार्वजनिक अस्पताल में समय पर डॉक्टर नहीं मिलते।

डॉक्टर यदि मिल भी जाता है, तो दवाइयाँ नही मिलती इसलिए गरीजो को महँगे दामों पर बाहर ही दम खरीदने को बाध्य होना पड़ता है। इसके अलावा डॉक्टर के साथ साथ केअशानाल के कर्मचारियों का व्यवहार भी रोगियों के प्रति बहुत खराब होता है। ऐसे में इन अस्पतालों में गरीब का ढंग से इलाज नहीं हो पाता। इसलिए लोग इन अस्पतालों में जाने से कतराते हैं।

प्र.१. (आ) निम्नलिखित पठित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[८]**

(1) आकृति पूर्ण कीजिए:**:** **2**

(i) नागर जी के सामने इनका साहित्य था **:-** प्रेमचंद और कौशिक का

(ii) नागर जी ने शुरू में इन्हें पढ़ा :- बंकिम के उपन्यास

(iii) नागर जी का पहला मित्र यह था **:-** छापे का अक्षर

(iv) नागर जी की पहली कविता का शीर्षक यह था **:-** 'कब लौं कहौं लाठी खाय!'

(2) उचित जोड़ियाँ मिलाइए **2**

रचना	**रचनाकार**
(i) देशी और बिलायती	(1) प्रभातकुमार मुखोपाध्याय
(ii) आनंदमठ	(2) बकिमंचंद्र चटर्जी
(iii) अपशकुन	(3) अमृतलाल नागर
(iv) देवी चौधरानी	(4) बंकिमचंद्र चटर्जी

(3) **(i)** लिंग परिवर्तन कीजिए **1**

→ **(I)** लेखक **-** लेखिका **(II)** कवि **–** कवयित्री

(ii) परिच्छेद से ऐसे दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए जिनका वचन परिवर्तन नहीं होता

→ **(I)** समय **(II)** आरंभ **1**

(4) 'ज्ञान तथा आनंद प्राप्ति का साधन वाचन' विषय पर अपने विचार लिखिए। 2

→ कहते हैं, पुस्तक मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र होती है। पुस्तकों में ज्ञानभरी बातें होती हैं। किताबों में संचित ज्ञान हमारे लिए, सहायक होता है। विभिन्न विचारकों, लेखकों तथा महान व्यक्तियों के विचार पुस्तकों में ही संग्रहित होते हैं। हमारे यहाँ साहित्य, तकनीक, विज्ञान, धर्म, राजनीति आदि सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हैं। आवश्यकता है इन्हें पढ़ने में रुचि रखने की पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ अद्‌भुत आनंद की प्राप्ति होती है। कोई भी मनुष्य हर दृष्टि से परिपूर्ण नहीं होता। मनुष्य बहुत सारी बातें देख-सुन और पढ़ कर सीखता है। विद्‌यार्थी पाठ्यपुस्तकों से ज्ञानार्जन करता है। बड़े होने पर इन पुस्तकों से उसका काम नहीं चलता। उसे ज्ञानार्जन के लिए और खुराक की आवश्यकता होती है। वह अपने पसंद वाले विषयों की पुस्तकें पढ़ता है। आई.सी.एस., आई.पी.एस. तथा आई.ए.एस. जैसी बड़ी-बड़ी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए भी वाचन की आवश्यकता होती है। पुस्तकों में क्या नहीं है**?** इसमें जो जितने गोते लगाता है, उसे उतना ही ज्ञान प्राप्त होता है।

प्र.१. (इ) निम्नलिखित अपठित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[४]**

१. संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

परिच्छेद में आए भगवानों के नाम			
ब्रहमा	विष्णु	महेश	हनुमान

२**.** प्रयाग जैसे ही किसी तीर्थस्थल के बारे में आठ से दस वाक्य लिखिए। **(२)**

→ नासिक शहर मुख्य रूप से महाराष्ट्र में स्थित हिंदुओं का एक प्रमुख पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है भगवान श्रीराम माता सीता व लक्ष्मण ने यहाँ काफी दिनों तक प्रयास किया है था । यह स्थल पवित्र गोदावरी नदी का उद्‌गम स्थल भी माना जाता है। यहाँ अनेक तीर्थ विद्‌यमान है। यहाँ प्रत्येक बारह वर्ष के पश्च्य पश्चात कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इस कुंभ मेले में लाखो -श्रद्‌धालु शामिल होते

हैं, और गोदावरी नदी के पवित्र जल में स्नान करते हैं। यहाँ बने घाट बहुत ही सुंदर व स्वच्छ है। यहाँ हिंदू धर्म के कई मंदिर बने है, जिसके दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ लगी रहती है|

विभाग २ – पद्य १२अंक

प्र.२. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[६]**

१. संजाल पूर्ण कीजिए: **(२)**

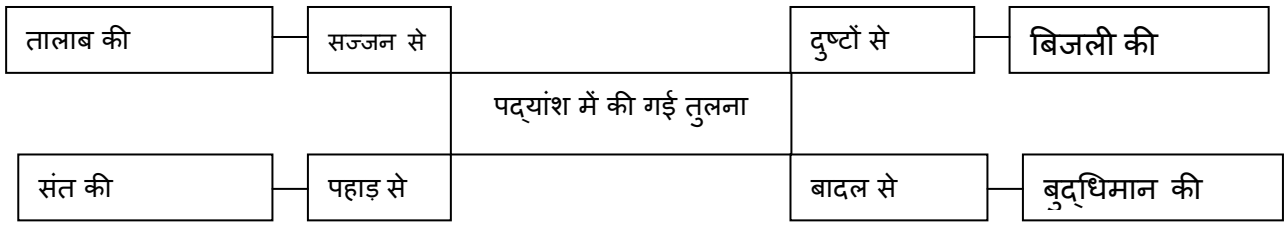

२. **i.** निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए: **(१)**

→ १. मन × बेमन २. सज्जन × दुर्जन

ii. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए: **(१)**

→ १. नदी :- नदियाँ २. सरिता:- सरिताएँ

३. पद्यांश की प्रथम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए। **(२)**

घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा ।।
दामिनि दमक रहहिं घन माहीं। खल के प्रीति जथा थिर नाहीं।।

प्रभु श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण से कह रहे हैं, है भाई, लक्ष्मण आकाश में बादल घमंड से चूर होकर गर्जना कर रहे हैं। ऐसे में प्रिया अर्थानि सीना के बिना मेरा मन डर रहा है। बिजली रह रहकर बादलों के बीच चमक रही है। उसकी चमक में उसी तरह ठहराव नहीं है, जिस तरह दुष्ट व्यक्ति के प्रेम म स्थिरता नहीं होती है।

प्र.२. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[६]**

१. ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों: **(२)**

१. स्वर्णिम

→ कैसा शिखर बनने की अपेक्षा नीव के अंदर दिखना श्रेष्ठ है?

२. आसमान

→ पदयांश में गर्द बनकर किस पर लिखने के लिए कहा गया है?

२. **i.** निम्नलिखित शब्दों के लिए पद्यांश में आए शब्द लिखिए: **(१)**

१. मात्र : सिर्फ २. दर्पण : आईना

ii. निम्नलिखित शब्दों से तद्धित बनाइए: **(१)**

१. पत्थर : पथरीला २. शहर : शहरीय

३. पद्यांश की प्रथम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए। **(२)**

→ प्रस्तुत गजल के माध्यम से गजलकार माणिक वर्मा कहता है कि जीवन की सार्थकता सिर्फ स्वर्णिम शिखर बनने में ही नहीं है बल्कि किसी शिखर को नींव बनने में भी है। गजलकार कहता कि बड़ी से बड़ी इमारत की बुनियाद नींद के मजबूत पत्थरों पर टिकी रहती है। अत: हम भी सदद नींव का वह वह मजदूत पत्थर अर्थात आधार बनना चाहिए जो कार्यों को ऊँचाई तक पहुंचा सके और उसे संभाले रखे क्योंकि शियर का वीय अस्तित्व तभी तक है अब तक उसकी नींव सुरक्षत है।

विभाग ३ - पूरक पठन **८ अंक**

प्र.३. (अ) निम्नलिखित पठित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[४]**

१. कृति पूर्ण कीजिए: **(२)**

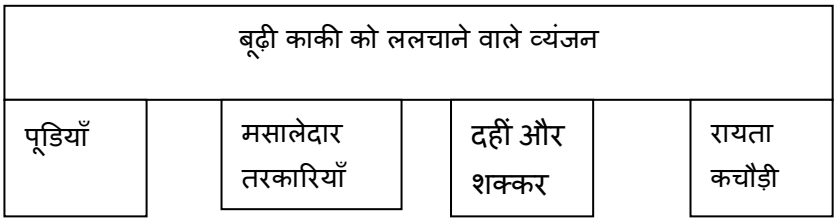

२. 'एक-एक पल, एक-एक युग के समान लगना', इस संदर्भ में अपने विचार लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए। **(२)**

→ जब हमें अपने जीवन में कुछ पाने की चाहत होती है, तब हम उसे पाने के लिए लगातार प्रयास करते हैं। यह इतजार बहुत मुश्किल, होता है। हमें एक- एकोपल एक- एक युग के समान लगता है। जब परिणाम बानने में थोड़ी भी देरी होती है, तो मन और व्याकुल हो जाता है। मन में तरह तरह के विचार आने लगते हैं। उदाहरण के लिए जब हम परीक्षा के लिए दिन-रात मेहनत करक परीक्षा देते है, तब उसका परिणाम घोषित होते समय एक-एक पल बहुत मुश्किल से कटता है।

प्र. ३. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[४]**

१. **i.** आकृति पूर्ण कीजिए: **(१)**

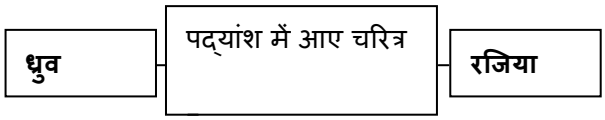

ii. आकृति पूर्ण कीजिए: **(१)**

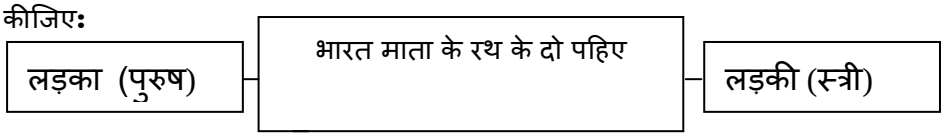

२. लिंग भेदभाव पर अपने विचार लिखिए। **(२)**

→ लिंग भेदभाव का मतलब हैं स्त्री और पुरुष मे भेदभाव करना विज्ञान व आधुनिकता के युग में भी हमारे देश में लिंग भेद्भाव बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। आज भी यदि किसी घर में लड़की का जन्म होता है, तो पूरा परिवार उसके भविष्य की जिम्मेदारियों को लेकर चिंतित हो जाता है और अगर वही लड़का अगर जन्म लेता है तो पूरा परिवार जश्न मनाता है। तो एक जगह चिंता और एक जगह खुशी क्यों**?** ये स्त्री और पुरुष में भेदभाव क्यों **?** इसका मुख्य कारण विवाह में दहेज जैसी प्रथा है। दहेज प्रथा के कारण ही बहुत से गरीब परिवार लड़कियों की कोच में ही हत्या कर देते हैं। 'लड़कियाँ पराया धन होती है। इस मानसिकता के के कारण भी हमारे घर, परिवार व समाज में लड़ लड़के-लड़कियों में भेदभाव दिखाई देता है। लड़कों के लिए लड़कियों की अपेक्षा अच्छा खाना, कपड़ा, शिक्षा आदि की व्यवस्था की जाती है। यह भेदभाव लड़कियों में असुरक्षा व असमानता का भाव पैदा करता है। अतः हमें इस तरह के व्यवहार को खत्म करने का प्रयास करना चाहिए और इसकी शुरुआत हमें अपने घर से करनी पड़ेगी।

विभाग ४ – भाषा अध्ययन (व्याकरण) **१४ अंक**

प्र. ४ सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए:

१. अधोरेखांकित शब्द का भेद लिखिए: **(१)**

<u>स्वयं</u> : निजवाचक सर्वनाम

२. निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए: (दो में से कोई एक) **(१)**

i. बाप रे !

→ बाप रे! इतना नुकसान हो गया।

ii. व

→ वह घूमने व खाने पर अधिक खर्च करता है।

३. तालिका पूर्ण कीजिए: (दो में से कोई एक) **(१)**

क्र.	संधि शब्द	संधि विच्छेद	भेद
i.	विश्वामित्र	विश्व + मित्र	स्वर संधि
ii.	संभव	सम् **+** भव	व्यंजन संधि

४. निम्नलिखित वाक्य में से सहायक क्रिया पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए: (दो में से कोई एक) **(१)**

i. गए : गया **ii.** रहा : रहना

५. निम्नलिखित क्रिया के प्रथम तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप लिखिए: (दो में से कोई एक) **(१)**

i. फैलना :

क्र.	**क्रिया**	**प्रथम प्रेरणार्थक क्रियारूप**	**द्‌वितीय प्रेरणार्थक क्रियारूप**
i.	**फैलना**	**फैलाना**	**फैलवाना**
ii.	जीना	जिलाना	जिलवाना

६. अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए: **(१)**

→ अपनी कला का अपमान होते देखकर माधव को ठेस लगी।

७. निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए: **(१)**

→ के - संबंध कारक

८. निम्नलिखित वाक्य में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए: **(१)**

→ विविध गुणों-दुर्गणों को भी दर्शाया गया है।

९. निम्नलिखित वाक्यों का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए: (तीन में से कोई दो) **(२)**

i. ये आवाज भी आपका ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। **(**अपूर्ण भूत काल**)**

→ ये आवाज भी आपका ध्यान अपनी ओर खींच रही थी।

ii. चिड़ियाँ वहाँ घोंसले बनाती नहीं दिखतीं। **(**अपूर्ण वर्तमान काल**)**

→ चिड़ियाँ वहाँ घोंसले बनाती नहीं दिख रही है।

iii. वह उसका बुरा न मानता। **(**सामान्य भविष्य काल**)**

→ वह उसका बुरा न मानेगा ।

१०. i. निम्नलिखित वाक्य का रचना के अनुसार भेद लिखिए: **(१)**

रूपा उस समय कार्य भार से उद्‌विग्न हो रही थी।

→ सरल वाक्य

ii. निम्नलिखित वाक्य का सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए**:** **(१)**

मैं वहाँ जा रहा हूँ। **(**प्रश्नार्थक वाक्य**)**

→ मैं कहाँ जा रहा हूँ **?**

११. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्‌ध करके लिखिए: **(२)**

i. इस स्वर्गिय द्रश्य का आनंद लेने में निमग्न थी।

→ इस स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी।

ii. कंपास बाक्स भी मंगाकर रखा है।

→ कंपास बॉक्स भी मँगाकर रखा है।

विभाग ५ - उपयोजित लेखन **२६ अंक**

प्र. ५. (अ)

१. पत्र-लेखन: **(५)**

निम्नलिखित जानकारी का उपयोग कर पत्र लिखिए**:**

छोटे भाई को पढ़ाई में परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते हुए पत्र लिखिए।

दिनांक: १९ जनवरी, २०२२
जनकल्याण होस्टल
अजय सिंह,
३०२/ जी, महाराष्ट्र।
ajay@xyz.com

प्यारे भाई,

सस्नेह आशीर्वाद ।

हम सभी यहाँ पर कुशलपूर्वक हैं और आशा है कि तुम भी वहाँ सकुशल होगे। कुछ दिनों बाद तुम्हारी परीक्षा शुरू होने वाली है। इस बार तुम्हें पिछली बार की अपेक्षा और अधिक अच्छे अंक लाने होंगे। गणित, विज्ञान और अंग्रेजी में खूब मेहनत करो। कक्षा में पढ़ाए जाने वाले पाठ को ध्यानपूर्वक सुना करो और होस्टल आकर उसका पुनः अभ्यास किया करो। पाठ से संबंधित कोई कठिनाई आने पर अध्यापक से विचार-विमर्श कर लिया करो। मन लगाकर पढ़ो और परीक्षा में अव्वल आओ। हमारी शुभकामनाएँ हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा भाई,
अमर
अमर सिंह,
३५, पुणे। केदार बिल्डिंग,
amar@xyz.com

अथवा

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र लिखिए:

दिनांक: ४ जनवरी, २०२२
सेवा में, माननीय प्रधानाचार्य महोदय,
आशा हाई स्कूल,
गांधी नगर, नई दिल्ली।
ashahschool@xyz.com

विषय: एक दिन के अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र |

महोदय जी,

कल एकाएक मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया। स्कूल से लौटते ही मेरे पेट में तेज दर्द हुआ, जिससे मैं बेचैन हो उठा। डॉक्टर के उपचार के उपरांत मुझे आराम मिला, परंतु रात्रि के समय ज्वर हो गया था। मुझे अब काफी शारीरिक कमजोरी अनुभव हो रही है। मैं स्कूल आने की स्थिति में नहीं हूँ। डॉक्टर ने भी मुझे आज पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी है।

कृपया मुझे एक दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

मनोज
मनोज सावंत,
कक्षा दसवीं (ब),
क्रमांक: ४४,
मनोहर बाग,
दिल्ली।
manoj@xyz.com

२. गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति): **(४)**

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों:

→ १. जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए?
२. हमारा मन कब घबराने लगता है?
३. हमें अपनी कमियों को कैसे दूर करना चाहिए?
४. हमें किसकी सलाह और सहयोग लेना चाहिए?

५. (आ) १. वृत्तांत लेखन: (७० ८० शब्द)

नीचे दिए गए विषय पर वृत्तांत लिखिए: **(५)**

→ मुंबई। कोल्हापुर पुलिस स्टेशन के प्रांगण में दिनांक १५ अगस्त, २०२१ को 'स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम की शुरुआत सुबह ७.०० बजे हुई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त बरिष्ठ पुलिस अधिकारी को आमंत्रित किया गया था। सबसे पहले वहाँ उपस्थित सभी पुलिस अधिकारी सावधान मुद्रा में खड़े हुए। फिर मुख्य अतिथि द्वारा झंडा फहराया गया। झंडा फहराने के साथ ही सभी ने राष्ट्रगान गाया और तिरंगे को सलामी दी। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू किए गए।

सबसे पहले शारदाश्रम विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा गणेश बंदना प्रस्तुत की गई। फिर देशभक्ति गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किए गए तथा कुछ पुलिस कर्मचारियों ने देशभक्ति गीत गाकर अपने देश व तिरंगे के प्रति सम्मान व गर्व की भावना प्रकट की। मुख्य अतिथि ने स्वतंत्रता दिवस पर सभी लोगों को प्यार भरा संदेश दिया। अंत में प्रमुख पुलिस अधिकारी ने मुख्य अतिथि व वहाँ उपस्थित सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट कर कार्यक्रम का समापन किया।

अथवा

कहानी-लेखन: (७० से ८० शब्द) **(५)**

→

जैसी करनी वैसी भरनी

एक किसान था। उसके खेतों में अच्छी फसल नहीं उग रही थी, इसलिए वह बहुत परेशान था। एक दिन वह अपने खेत के सामने वाले एक बड़े पेड़ की छाया में बैठकर सोचने लगा कि आखिर क्या कमी रह जा रही है, जिसकी वजह से फसल अच्छी नहीं हो रही। इतने में पेड़ के नीचे एक बिल से साँप बाहर निकला। किसान साँप को देखकर डर गया और मन-ही-मन सोचने लगा कि हो न हो यह इसी साँप के प्रकोप के कारण हो रहा है। यदि मैं इसकी सेवा करूंगा तो अवश्य यह प्रसन्न हो जाएगा।

एक दिन किसान ने एक कटोरे में दूध भरकर बिल के बाहर रख दिया। साँप दूध पीकर चला गया। किसान जब कटोरा लेने वापस बिल के पास गया, तो उसने कटोरे में एक सोने का सिक्का देखा। सोने का सिक्का देखकर किसान बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अब रोज कटोरे में दूध रखना शुरू कर दिया और रोज उसे एक सोने का सिक्का मिलने लगा। किसान धीरे-धीरे अमीर हो गया। एक दिन उसे किसी काम के सिलसिले में शहर जाना था। उसने अपने बेटे को बिल के पास दूध रखने के लिए कहा।

दूसरे दिन बेटे ने बिल के पास दूध का कटोरा रख दिया। थोड़ी देर बाद जब उसने कटोरा देखा, तो उसमें एक सोने का सिक्का था। सोने का सिक्का देखकर उसने सोचा कि जरूर इस पेड़ के नीचे ढेर सारे सोने के सिक्के हैं, जिनमें से साँप रोज एक सिक्का कटोरे में डाल देता है। यदि मैं इस बिल को खोद कर साँप को मार डालूँ तो मुझे सारे सिक्के एक साथ मिल जाएँगे। लालच में आकर अगले दिन उसने बिल खोदना शुरू किया। थोड़ी देर बाद उस बिल में से साँप बाहर आ गया। साँप को देखकर लड़के ने उसे डंडे से मारना चाहा, परंतु निशाना चूक गया और साँप ने लड़के को

ही डॅस लिया। लड़के की तुरंत मृत्यु हो गई। किसान को जब अपने बेटे की करनी का पता चला तब उसे बहुत दुख हुआ।
सीख: जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

२. विज्ञापन-लेखन: (५० से ६० शब्द)

सुंदरी साबुन का आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। **(५)**

चेहरे को गोरा बनाए,
एक हफ्ते में निखार लाए।

सुंदरी साबुन

(२० सालों का विश्वास**)**
मुँहासों के दाग, काले निशान,
कालापन आदि को दूर करे,
सिर्फ एक हफ्ते इस्तेमाल करने पर
त्वचा निखर-निखर जाएगी।

दिन में तीन बार इस साबुन को लगाइए और मनचाहा परिणाम पाइए।
सभी किराना की दुकानों व मेडिकल
स्टोर्स में उपलब्ध

कीमत**:** ४० रुपए
संपर्क **:** ९८०००००००
ई-मेल आईडी**: sundari@xyz.com**

प्र. ५. (इ) निबंध लेखन: **(७)**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए:

१. मेरा प्रिय खिलाड़ी

मेरा प्रिय खिलाड़ी

मेरा प्रिय खेल क्रिकेट और प्रिय खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर है। सचिन का जन्म २४ अप्रैल, १९७३ को मुंबई में हुआ। सचिन का नाम उनके पिता ने अपने चहेते संगीतकार सचिन देव बर्मन के नाम पर रखा था। सचिन तेंदुलकर ने मात्र १६ वर्ष की आयु में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया। उसके बाद बल्लेबाजी में उन्होंने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट व एक दिवसीय क्रिकेट दोनों में सर्वाधिक शतक बनाए हैं। सचिन मेरे प्रिय खिलाड़ी इसलिए हैं, क्योंकि उन्होंने क्रिकेट का खूब अभ्यास किया है और उनकी वाणी में मिठास तथा व्यक्तित्व में स्पष्टता झलकती है। अपनी प्रसिद्धि के बावजूद उनमें अहंकार की भावना दूर-दूर तक नजर नहीं आती। छोटे कद और घुँघराले बालों वाले सचिन क्रिकेट के धुरंधर खिलाड़ी हैं। वे अर्जुन की तरह अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहते हैं। चाहे उनके प्रतिद्वंद्वी उन्हें कितना भी उकसाए फिर भी वे अपना धैर्य नहीं खोते हैं। इसी गुण में उनकी शानदार सफलता का राज छिपा हुआ है।

विश्वकप-२००३ में सबसे अधिक रन बनाकर वे किसी भी विश्वकप में ऐसा करने वाले विश्व के प्रथम बल्लेबाज बने। उस विश्वकप में उन्हें 'प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' का पुरस्कार भी दिया गया। ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट से उन्होंने अक्टूबर २०१२ में संन्यास ले लिया और दिसंबर २०१२ में एकदिवसीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। १६ नवंबर, २०१३ में उन्होंने अपना आखिरी मैच खेला। उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है। सचिन तेंदुलकर क्रिकेट जगत के सबसे प्रसिद्ध एवं शानदार खिलाड़ी हैं। मेरे ही जैसे विश्वभर में उनके अनेकों प्रशंसक हैं। हम सभी उन्हें प्यार से भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं, जिनमें सबसे प्रचलित लिटिल मास्टर व मास्टर ब्लास्टर है। अपने अच्छे व्यवहार के लिए वे मुझ जैसे युवाओं के आदर्श बन गए हैं। क्रिकेट जगत में अपनी अतुलनीय बल्लेबाजी द्वारा सचिन एक महान बल्लेबाज के रूप में जाने जाते हैं। अपने शानदार खेल द्वारा उन्होंने हमेशा हमारे देश को गौरवान्वित किया है। मैं भी नित्य क्रिकेट का अभ्यास करूंगा और सचिन तेंदुलकर की तरह एक बेहतरीन खिलाड़ी बनकर अपने देश, समाज व माता-पिता का नाम रोशन करूंगा।

२. सड़क की आत्मकथा

मैं सड़क हूँ, संसार का सबसे बड़ा संचार मार्ग। ऊपर से वाहनों द्वारा अथवा पैदल रोज ही न जाने कितने लोग सफर करते हुए अपनी मंजिल तक पहुँचते हैं। मैं विभिन्न स्थानों को आपस में जोड़ती हूँ। सर्वप्रथम मेरे निर्माण के लिए पेव्ड स्टोन का प्रयोग किया गया। भारत में जीटी रोड यानी ग्रांट ट्रंक रोड का इतिहास सबसे पुराना है। मुझे शेरशाह सूरी ने बनवाया था। मैं सोनाग्राम, जो ढाका के नजदीक है, वहाँ से चली थी और मैं आज पूरे भारत में मेरा जाल बिछा हुआ है।

मैं भारत में कई रूपों में दिख जाती हूँ। कहीं-कहीं मैं मक्खन की तरह चिकनी, तो कहीं-कहीं ऊबड़-खाबड़ भी हूँ। मैं किलोमीटरों तक सीधी रहती हूँ, तो कहीं-कहीं साँप की तरह बलखाते हुए चलती हूँ। मैं बिना किसी शिकायत के लाखों टन का बोझ अपने ऊपर से मुस्कराते हुए सह जाती हूँ और लोगों के जीवन को आसान बनाने में अपना योगदान लंबे समय से देती आ रही हूँ।

मुझे दुख इस बात का है कि लोग मुझे गंदा करते हैं। मेरी देखभाल ठीक से नहीं करते हैं। हालाँकि इससे परेशानी उन्हें ही होती है फिर भी लोग इस बात को नहीं समझते कि सड़क को व्यवस्थित व साफ रखने में लाभ उन्हीं का है। मेरा जीवन परोपकार के लिए बना है। लोगों को और उनके सामानों को मंजिल तक पहुँचाने में मुझे आत्मिक संतोष मिलता है। मेरे जीवन का लक्ष्य कुछ पाना नहीं है, बल्कि सदा ही लोगों की सहायता करना है।

अथवा

३. नदी किनारे दो घंटे

नदी का नाम आते ही मेरे मन में गंगा की लहरें हिलोरें मारने लगती हैं और उसकी निर्मल धारा मेरी आत्मा को स्पर्श करने लगती है। ठंडी का समय था। प्रयाग की पावन धरती पर महाकुंभ लगा हुआ था। मैं अपने पूरे परिवार के साथ इस पवित्र पर्व का लाभ उठाने इलाहाबाद पहुँचा। वहाँ से हम सड़क मार्ग से होते हुए संगम पर पहुँचे। वहाँ गंगा घाट पर भक्तों का ताँता लगा हुआ था। एक साथ हजारों भक्त संगम में डुबकियाँ लगा रहे थे। संगम में स्नान करने पर हमारी आत्मा भी तृप्त हो गई।

नदी के तट पर काफी चहल-पहल थी। एक ओर खाने-पीने की वस्तुओं की दुकानें सजी हुई थीं, तो दूसरी ओर कल्पवास करने वाले श्रद्धालुओं के तंबू लगे हुए थे। साधुओं की भी अलग-अलग टोली हमें वहाँ देखने को मिली। कुछ संन्यासी जहाँ अपने-अपने अखाड़े में प्रवचन करते दिखाई दे रहे थे, तो वहीं नागाओं की टोली अलग हर-हर महादेव का जय-जयकार करती हुई गंगा में डुबकियाँ लगाती और नाचती-गाती दिखाई दे रही थी। अलग-अलग अखाड़े में साधुओं की ओर से भोज का आयोजन किया गया था, जहाँ एक साथ सैकड़ों भक्त महाप्रसाद का आनंद उठा रहे थे। इस प्रकार के महाप्रसाद का आयोजन लगभग पूरे कुंभ क्षेत्र में किया गया था। हमने भी उन्हीं में से एक अखाड़े में महाप्रसाद प्राप्त किया। खेल-खिलौनों की भी दुकानें कुंभ मेले में सजी-धजी थीं। मैंने एक दुकान पर जमकर निशानेबाजी की और कुछ इनाम भी जीते।

कुंभ मेले में घूमते-घूमते संध्या हो गई। सूरज ढल रहा था। उस समय ढलता हुआ सूरज ऐसा लग रहा था कि जैसे वह भी माँ गंगा की लहरों में डुबकी लगा रहा है। संध्या समय सूरज की सुनहली रोशनी जब गंगा पर पड़ी तो गंगाजल विशुद्ध सोने की तरह चमचमाने लगा। छोटी-बड़ी नावों पर बैठकर श्रद्धालु गंगा की परिक्रमा कर रहे थे। माँ गंगा की संध्या आरती का समय हो गया था। तैयारियाँ पूरी हुई और माता की आरती शुरू हुई। चारों ओर दीप प्रज्वलित थे और भक्त, साधु, संन्यासी सभी मंत्रोच्चार कर रहे थे। पूरा गंगाघाट रोशनी में नहाया हुआ प्रतीत हो रहा था। गंगा के किनारे जगमगाते अनगिनत दीप और आरती के पश्चात उसके किनारों पर प्रवाहित दीये ऐसे लग रहे थे कि जैसे आसमान के सारे तारे धरती पर आज मैया की गोद में उतर आए है। गंगा दर्शन और महाकुंभ स्नान के पश्चात मैं और मेरा परिवार वापस अपने घर की ओर लौटा, लेकिन नदी किनारे बिताए इन दो घंटों की अमिट छाप मेरे मन और मस्तिष्क पर आजीवन अंकित रहेगी।

Together we will make a difference